राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से युवाओं में कौशल विकास एवं शैक्षिक उन्नयन (छत्तीसगढ़ राज्य के विषेष संदर्भ में)

[1]**सत्येन्द्र,** शोधार्थी, महंत लक्ष्मीनारायण दास महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2]**डॉ. शांतनु पॉल,** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य विभाग), महंत लक्ष्मीनारायण दास महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

यह शोध पत्र राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता के माध्यम से छत्तीसगढ़ के युवाओं में कौशल विकास और शैक्षिक उन्नयन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय सेवा योजना, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित एक प्रमुख युवा विकास कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य 'सेवा के माध्यम से शिक्षा' को प्रोत्साहित करते हुए छात्रों में सामाजिक दायित्व, नेतृत्व कौशल और समुदाय–आधारित सीखने की क्षमताओं का विकास करना है। अध्ययन में छत्तीसगढ़ के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना के 447 स्वयंसेवकों से प्राप्त प्राथमिक आंकडों के आधार पर नेतृत्व, संचार, सामूहिक कार्य, समस्या–समाधान और सामाजिक संवेदनशीलता जैसी प्रमुख दक्षताओं का मूल्यांकन किया गया। इसके साथ ही यह भी अध्ययन किया गया कि राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा संचालित सामुदायिक सेवा, स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास और आपदा प्रबंधन जैसी गतिविधियाँ छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, सीखने की प्रेरणा तथा व्यावहारिक ज्ञान को किस प्रकार सुदृढ़ करती हैं। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों अनुसंधान विधियों से प्राप्त निष्कर्ष दर्शाते हैं कि राष्ट्रीय सेवा योजना में सक्रिय भागीदारी न केवल छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक कौशल को विकसित करती है, बल्कि उनके अकादमिक उन्नयन में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। अंततः, यह शोध–पत्र स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना छत्तीसगढ़ के युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत प्रभावी मंच के रूप में कार्य करता है और राज्य में कौशल–आधारित शैक्षणिक पहलों को सुदृढ़ करने की व्यापक संभावनाएँ प्रदान करता है।

शब्दकुंजी: *राष्ट्रीय सेवा योजना, कौशल विकास, शैक्षिक उन्नयन, छत्तीसगढ़, युवा, व्यक्तित्व विकास।*

1. प्रस्तावना :

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

इक्कीसवीं सदी के वैश्विक वातावरण में किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता, आर्थिक प्रगति और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता उसके युवाओं की गुणवत्ता, कौशल–संपन्नता और सामाजिक दायित्वबोध पर आधारित होती है। भारत, जो आज विश्व के सबसे युवा देशों में शामिल है, जनसांख्यिकीय लाभांश के एक महत्वपूर्ण चरण से गुजर रहा है। विभिन्न जनगणना आँकड़े और श्रम–संबंधी रिपोर्टें संकेत करती हैं कि देश की एक बड़ी जनसंख्या कार्यशील आयु वर्ग में आती है, जो राष्ट्र के विकास हेतु अपार संभावनाएँ उत्पन्न करती है। तथापि, यह जनसांख्यिकीय शक्ति तभी वास्तविक संसाधन में परिवर्तित हो सकती है जब युवा वर्ग को उपयुक्त दिशा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार–उन्मुख कौशल उपलब्ध हों *(International Labour Organization 2024; Final-report-of-Sub-Group-Report-on-Skill-Development 2015)*।

जहाँ औपचारिक शिक्षा प्रणाली बौद्धिक विकास और सैद्धांतिक ज्ञान की आधारशिला रखती है, वहीं युवाओं के सर्वांगीण व्यक्तित्व–जैसे सामाजिक जागरूकता, नेतृत्व क्षमता, नैतिक मूल्य और जीवनोपयोगी कौशल के विकास में कक्षा के बाहर के अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना उच्च शिक्षा क्षेत्र में एक सशक्त और प्रभावी मंच के रूप में स्थापित हुई है, जो विद्यार्थियों को सीखने, सेवा और सामाजिक सहभागिता का व्यवहारिक अवसर प्रदान करती है।

 Copyright @ 2026 Author

भारत में विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा से जोड़ने की अवधारणा महात्मा गांधी के उन आदर्शों से उत्पन्न हुई, जिनमें वे युवाओं को सामाजिक दायित्व निभाने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय रूप से सहभागी बनने की प्रेरणा देते थे। राष्ट्रीय सेवा योजना की वैचारिक नींव भी इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है, जहाँ गांधीजी विद्यार्थियों को केवल पुस्तक–ज्ञान तक सीमित न रहकर समुदाय से प्रत्यक्ष जुड़ने और उसके विकास में योगदान देने की सलाह देते थे। स्वतंत्रता के बाद उच्च शिक्षा में सामाजिक सेवा को सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया गया। UGC विभिन्न शिक्षा आयोगों, केंद्रीय सलाहकार शिक्षा बोर्ड तथा प्रथम पंचवर्षीय योजना सहित अनेक समितियों ने विद्यार्थियों की सामाजिक भागीदारी को आवश्यक माना। डॉ. डी.एस. कोठारी आयोग (1964–66) ने भी सामाजिक सेवा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की अनुशंसा की। इन सिफारिशों के आधार पर 1969 में गांधी जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरुआत की गई, जिसने छात्रों को समाजसेवा, ग्रामीण जीवन की समझ और सेवा–भाव विकसित करने का मंच प्रदान किया *(National Service Scheme Revised Manual 2006)*।

छत्तीसगढ़ राज्य, जिसकी स्थापना 1 नवंबर 2000 को हुई, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और ग्रामीण प्रधान आबादी के लिए विशेष रूप से पहचाना जाता है *(Government of Chhattisgarh 2025)*। राज्य में उच्च शिक्षा संस्थानों का द्रुत विस्तार हुआ है, जिसके साथ राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाइयों और स्वयंसेवकों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में छत्तीसगढ़ में लगभग 1,07,379 राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से संबद्ध होकर विविध सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं *(NSS Volunteers-National Service Scheme 2025)*। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राज्य के युवाओं में कौशल विकास और शैक्षिक उन्नयन के संदर्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका, प्रभावशीलता तथा उसके वास्तविक योगदान का विश्लेषण करना है।

1.2 राष्ट्रीय सेवा योजना की अवधारणा और उद्देश्य

राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य "मैं नहीं, आप" (Not Me But You) है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों की भावना को अभिव्यक्त करता है और निस्वार्थ सेवा, सहानुभूति तथा परस्पर सहयोग के महत्व को रेखांकित करता है। राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर के रथ के पहिये से प्रेरित है, जो सतत गतिशीलता, प्रगति, निरंतरता और परिवर्तनंशीलता का प्रतीक माना जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, चरित्र तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के समग्र विकास को सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना के आधिकारिक नियमावली के अनुरूप इसके प्रमुख उद्देश्यों का संक्षेप निम्न प्रकार है*(National Service Scheme Revised Manual 2006)*–

1. उस समुदाय के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को समझना, जिसमें विद्यार्थी सेवा कार्य करते हैं।
2. समुदाय–केन्द्रित सहभागिता के माध्यम से अपने व्यक्तित्व, क्षमताओं एवं व्यवहारिक प्रवृत्तियों का आत्ममूल्यांकन करना।
3. समुदाय की आवश्यकताओं, समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान कर विद्यार्थियों को समस्या–समाधान की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से संलग्न करना।
4. सामाजिक एवं नागरिक उत्तरदायित्व की उन्नत भावना विकसित करना, जिससे विद्यार्थी लोकतांत्रिक समाज के सक्रिय नागरिक बन सकें।
5. अर्जित शैक्षणिक ज्ञान एवं कौशल का अनुप्रयोग कर व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्तर पर व्यावहारिक समाधान विकसित करने की क्षमता का संवर्धन करना।
6. समूह–निवास, सहजीवन तथा उत्तरदायित्व–साझेदारी हेतु आवश्यक दक्षताओं का विकास करना।
7. समुदाय को संगठित कर विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने की दक्षता प्राप्त करना।
8. नेतृत्व गुणों, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, सहयोगात्मक कार्यशैली एवं नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना।
9. आपात स्थितियों, प्राकृतिक आपदाओं एवं संकट परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता विकसित करना।

1.3 कौशल विकास एवं शैक्षिक उन्नयन का महत्व

 Copyright @ 2026 Author

आज की वैष्विक प्रतिस्पर्धात्मक अर्थव्यवस्था में मात्र औपचारिक शैक्षिक उपाधि प्राप्त होना रोजगार सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। आधुनिक नियोजक तकनीकी दक्षताओं के साथ–साथ संचार कौशल, सामूहिक कार्य क्षमता, समस्या–समाधान योग्यता तथा नेतृत्व जैसे विविध 'सॉफ्ट स्किल्स' की अपेक्षा करते हैं।

कौशल विकास के संदर्भ में, विभिन्न अध्ययनों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि रासेयो स्वयंसेवकों में नेतृत्व क्षमता (80.49%) तथा संचार कौशल (68.29%) में गैर–रासेयो विद्यार्थियों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है *(Nama 2025)*। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में, जहाँ ग्रामीण एवं आदिवासी पृष्ठभूमि के युवा मुख्यधारा के रोजगार बाजार में प्रतिस्पर्धा का सामना करते हैं, ऐसे कौशल विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। रासेयो के शिविर एवं विविध गतिविधियाँ विद्यार्थियों को पारंपरिक कक्षा–शिक्षण से परे अनुभवात्मक अधिगम का अवसर प्रदान करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनका आत्मविश्वास तथा व्यावहारिक दक्षता दोनों में वृद्धि होती है *(Patil-Nikam 2024)*।

शैक्षिक उन्नयन का आशय मात्र प्राप्तांकों में वृद्धि तक सीमित न होकर, अर्जित ज्ञान के परिस्थितिजन्य एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग से संबंधित है। राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को सिकल सेल एनीमिया, कुपोषण, डिजिटल साक्षरता इत्यादि जैसी विविध सामाजिक वास्तविकताओं से प्रत्यक्ष परिचित कराती है, जिसके परिणामस्वरूप वे समुदाय–स्तरीय चुनौतियों की गहन समझ विकसित करते हैं *(Soni et al. 2025)*। इस प्रकार के अनुभवजन्य अवलोकन न केवल उनके शैक्षणिक ज्ञान को अधिक संदर्भित एवं प्रासंगिक बनाते हैं, बल्कि उनकी संपूर्ण अधिगम–प्रक्रिया को भी समृद्ध, सुदृढ़ एवं प्रभावी रूप से परिवर्तित करते हैं।

1.4 अध्ययन की आवश्यकता

छत्तीसगढ़ राज्य अपनी विशिष्ट जनजातीय विरासत और व्यापक ग्रामीण आबादी के कारण राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों हेतु एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक एवं सामाजिक क्षेत्र के रूप में उभरता है। राज्य में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की संख्या उल्लेखनीय रूप से अधिक है और वे विभिन्न सामुदायिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता निभाते हैं*(Department of Public Relations 2024)*। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभावों पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि छत्तीसगढ़ राज्य के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा युवाओं के कौशल विकास एवं शैक्षिक उन्नयन पर पड़ने वाले प्रभावों का गहन एवं व्यवस्थित विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत अध्ययन इसी क्षेत्रीय शोध–अंतर को पूरित करने का प्रयास करता है। तथा राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) के अनुसार, 2012–22 के बीच छत्तीसगढ़ में लगभग 30.44 लाख प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता अनुमानित थी, परंतु स्थानीय युवाओं में आवश्यक नियोजनीय कौशलों की कमी एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बनी रही *(District-level Skill Gap Study For The State Of Chhattisgarh - India CSR 2022)*। इस परिप्रेक्ष्य में, यह अध्ययन यह मूल्यांकन करने हेतु आवश्यक है कि क्या राष्ट्रीय सेवा योजना राज्य में विद्यमान कौशल–अंतराल को प्रभावी रूप से कम करने में सहायक सिद्ध हो रही है।

1.5 समस्या का प्रतिपादन

यद्यपि राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्घोषित लक्ष्य युवाओं के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है, तथापि इसके वास्तविक प्रभाव एवं व्यवहारिक परिणामी स्वरूप को लेकर समय–समय पर प्रश्न उठते रहे हैं। यह विचारणीय है कि क्या राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ केवल औपचारिकता तक सीमित हो गई हैं, अथवा वे वास्तव में विद्यार्थियों के आचरण, दृष्टिकोण और कौशलों में सार्थक परिवर्तन उत्पन्न कर रही हैं। इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, प्रस्तुत शोध समस्या को निम्न रूप में प्रतिपादित किया गया है–

क्या राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता छत्तीसगढ़ राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों के युवाओं के कौशल विकास और शैक्षिक उन्नयन में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण योगदान देती है?

 Copyright @ 2026 Author

2. अध्ययन के उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1. राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न गतिविधियों का विद्यार्थियों के कौशल—विकास—विशेषतः नेतृत्व, संचार एवं सामूहिक कार्य क्षमता पर होने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।
2. राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन, जैसे—अकादमिक प्रदर्शन तथा अर्जित ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों में कार्यक्रम के दौरान विकसित होने वाले विविध कौशलों की व्यवस्थित पहचान और वर्गीकरण करना।
4. लिंग, पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक स्तर जैसे जनसांख्यिकीय चर के आधार पर कौशल—विकास एवं शैक्षिक उन्नयन में विद्यमान भिन्नताओं का अध्ययन करना।
5. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों को अधिक परिणामदायी एवं प्रभावी बनाने हेतु उपयुक्त सुझाव एवं नीतिगत अनुशंसाएँ प्रस्तुत करना।

3. शोध परिकल्पनाएँः

- **H0 (शून्य परिकल्पना)** : राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता का युवाओं के कौशल विकास तथा शैक्षिक उन्नयन पर कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
- **H1 (वैकल्पिक परिकल्पना)** : राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता का युवाओं के कौशल विकास तथा शैक्षिक उन्नयन पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव है।

4. साहित्य समीक्षाः

4.1 राष्ट्रीय सेवा योजना पर आधारित प्रमुख पूर्व शोधः

राष्ट्रीय सेवा योजना से संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों में व्यापक रूप से यह दर्शाया गया है कि राष्ट्रीय सेवा योजना व्यक्तित्व विकास तथा सामाजिक कौशलों के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोबो के अध्ययन में यह पाया गया कि राष्ट्रीय सेवा योजना में सक्रिय सहभागिता से विद्यार्थियों की मौखिक एवं लिखित संप्रेषण क्षमता में उल्लेखनीय सुधार परिलक्षित होता है *(Lobo et al. 2024)*। इसी प्रकार, मुदी (2025) के अनुसार राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों में सामूहिक कार्य, निर्णय—निर्माण एवं समस्या—समाधान जैसी आवश्यक क्षमताओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है *(Mudi 2025)*। इन शोधों ने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रीय सेवा योजना कक्षा में अर्जित सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक अनुभव में रूपांतरित करने हेतु एक प्रभावी सेतु के रूप में कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, अनेक अध्ययनों ने राष्ट्रीय सेवा योजना को नागरिक सहभागिता एवं राष्ट्रीय विकास में युवाओं की सक्रिय भागीदारी के लिए एक सशक्त मंच के रूप में रेखांकित किया है।

4.2 कौशल विकास संबंधित साहित्य

कौशल विकास संबंधी साहित्य यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि अनुभव—आधारित अधिगम पारंपरिक कक्षा—केंद्रित शिक्षण की तुलना में अधिक प्रभावी एवं परिणामदायी सिद्ध होता है *(D.A. Kolb 1984)*। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना जैसी विभिन्न सरकारी पहलों ने भी युवाओं में कौशल उन्नयन के महत्त्व को रेखांकित किया है। राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों में विकसित होने वाले सामाजिक कौशल—जैसे सहानुभूति, उत्तरदायित्वबोध और सामुदायिक संवेदनशीलता उन्हें सामाजिक चुनौतियों के समाधान हेतु सक्षम बनाते हैं *(Ramachandran 2024)*। कौशल विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष रूप से सॉफ्ट स्किल्स, जैसे नेतृत्व क्षमता, समय—प्रबंधन तथा पारस्परिक संप्रेषण कौशल, के संवर्धन पर केंद्रित रहता है, जो किसी भी व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता के लिए अनिवार्य माने जाते हैं। अनुभवजन्य अधिगम सिद्धांत (Experiential Learning Theory) के अनुसार राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ डेविड कोल्ब के अधिगम चक्र के अनुरूप संचालित होती हैं, जिसमें ठोस अनुभव (Concrete Experience) विद्यार्थी को चिंतनशील अवलोकन (Reflective Observation) और तत्पश्चात सक्रिय प्रयोग (Active Experimentation) की दिशा में प्रवृत्त करता है *(D.A. Kolb 1984)*।

 Copyright @ 2026 Author

4.3 शैक्षिक उन्नयन पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय साहित्य

शैक्षिक उन्नयन का अर्थ केवल श्रेणी में वृद्धि तक सीमित न होकर, सामाजिक–भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नागरिक उत्तरदायित्व के विकास को भी समाहित करता है। राष्ट्रीय सेवा योजना जैसी सामुदायिक सेवा आधारित गतिविधियाँ विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक चुनौतियों से अवगत कराती हैं, जिससे वे अपने अकादमिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप में लागू कर पाते हैं और उनका शैक्षिक अनुभव अधिक प्रासंगिक एवं समृद्ध होता है *(Minati Saha 2019)*। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाए गए सेवा–शिक्षण मॉडल के अनुसार, शैक्षिक उन्नयन तब अधिक प्रभावी होता है जब विद्यार्थी सिद्धांत को सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में प्रयोग करना सीखते हैं। यह दृष्टिकोण ज्ञान को अधिक टिकाऊ, अर्थपूर्ण और व्यवहारिक बनाता है, जिससे छात्रों का समग्र शैक्षिक विकास सुनिश्चित होता है *(Bringle 2015)*।

4.4 छत्तीसगढ़ राज्य में राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियों से संबंधित शोध

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय सेवा योजना से संबंधित शोध अपेक्षाकृत सीमित हैं, तथापि उपलब्ध स्रोत दर्शाते हैं कि राज्य की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयाँ स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण तथा ग्रामीण विकास से जुड़े विविध कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं *(Department of Public Relations 2024)*। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को स्थानीय समुदायों की समस्याओं को समझने तथा उनके समाधान में सहभागिता का अवसर प्रदान करती हैं, जो शैक्षिक उन्नयन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। विशेष रूप से राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयों ने स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जागरूकता अभियानों के संचालन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन पहलों ने जहाँ एक ओर स्थानीय समुदायों को प्रत्यक्ष लाभ पहुँचाया है, वहीं दूसरी ओर स्वयंसेवकों को क्षेत्रीय विकास से सम्बंधित चुनौतियों एवं उनके व्यावहारिक समाधानों की गहन समझ विकसित करने का सुअवसर प्रदान किया है।

4.5 शोध–अंतरालः

उपलब्ध साहित्य यद्यपि राष्ट्रीय सेवा योजना के सकारात्मक प्रभावों की पुष्टि करता है, तथापि छत्तीसगढ़ के संदर्भ में कौशल विकास एवं शैक्षिक उन्नयन के मध्य संबंध का सांख्यिकीय परीक्षण स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है। प्रस्तुत अध्ययन इस शोध–अंतर को संबोधित करते हुए संरचित प्रश्नावली और उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से एक अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

5. शोध प्रविधि

5.1 शोध का स्वरूप

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक स्वरूप का होगा। वर्णनात्मक भाग रासेयो की संरचना और गतिविधियों का अवलोकन प्रस्तुत करेगा, जबकि विश्लेषणात्मक भाग परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए सांख्यिकीय समंको का उपयोग करेगा।

5.2 अध्ययन का क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के चयनित महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तक सीमित रहेगा, जहाँ रासेयो इकाइयाँ सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं।

5.3 अध्ययन की जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में छत्तीसगढ़ के उच्च शिक्षा संस्थानों के रासेयो स्वयंसेवक शामिल होंगे।

5.4 न्यादर्श चयन एवं न्यादर्श तकनीक

न्यादर्श चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श (Stratified Random Sampling) तकनीक अपनाई जाएगी, जिससे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के रासेयो स्वयंसेवकों के साथ–साथ विभिन्न लिंग श्रेणियों तथा शैक्षिक स्तरों (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) के विद्यार्थियों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। इस स्तरीकरण–आधारित न्यादर्श रूपरेखा के अंतर्गत कुल 447 प्रतिभागियों को विश्लेषण हेतु अंतिम न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया, जो अध्ययन की बाह्य वैधता एवं परिणामों की प्रतिनिधिकता को सुदृढ़ करता है।

 Copyright @ 2026 Author

5.5 समंको का संग्रहण

इस अध्ययन में प्राथमिक समंको के संग्रह हेतु एक संरचित एवं मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसे ऑनलाइन माध्यम से प्रतिभागियों तक पहुँचाया गया। प्रश्नावली में लिकर्ट स्केल आधारित मदों को सम्मिलित किया गया, जिनके माध्यम से कौशल विकास (नेतृत्व, संचार,सामूहिक कार्य आदि) तथा शैक्षिक उन्नयन का वस्तुनिष्ठ मापन संभव हो सके।

5.6 समंक विष्लेषण के उपकरण

संग्रहित संमकों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया जाएगा–

• वर्णनात्मक सांख्यिकी

प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं, राष्ट्रीय सेवा योजना सहभागिता की अवधि तथा विभिन्न कौशल आयामों के स्तर का संक्षेप प्रस्तुत करने हेतु प्रतिशत, औसत (Mean) और मानक विचलन (Standard Deviation) का उपयोग किया गया है।

• अनुमानात्मक सांख्यिकी

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु स्वतंत्र नमूना t–परीक्षण (Independent Sample t-test) का प्रयोग किया गया है।

5.7 अध्ययन की सीमाएँ

- यह अध्ययन केवल छत्तीसगढ़ राज्य के चयनित संस्थानों तक सीमित है।
- समंको का संग्रहण स्वयंसेवकों की आत्म–मूल्यांकन (Self-Assessment) पर आधारित है, जिसमें सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रह की संभावना हो सकती है।

6. संमको का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

6.1. लिंग आधारित वितरण

प्रस्तुत सर्वेक्षण में कुल 447 प्रतिभागियों ने भाग लिया। लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण निम्नानुसार पाया गया–

तालिका 1: लिंग आधारित वितरण

लिंग	संख्या	प्रतिशत
पुरुष	263	58.84%
महिला	184	41.16%
कुल	**447**	**100%**

चित्र 1: लिंग आधारित वितरण प्रतिषत

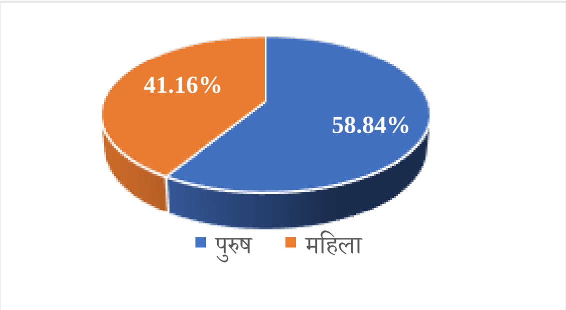

तालिका 1 एवं चित्र 1 के अनुसार, कुल 447 प्रतिभागियों में से 263 (58.84%) पुरुष तथा 184 (41.16%) महिला हैं। प्रतिशतात्मक वितरण से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में पुरुष प्रतिभागियों की संख्या महिला प्रतिभागियों की तुलना में अधिक रही।

 Copyright @ 2026 Author

 ISSN: 2278-4632

6.2. पृष्ठभूमि आधारित वितरण

तालिका 2: पृष्ठभूमि आधारित वितरण

पृष्ठभूमि	संख्या	प्रतिशत
शहरी	284	63.53%
ग्रामीण	163	36.47%
कुल	**447**	**100%**

चित्र 2: पृष्ठभूमि आधारित वितरण प्रतिषत

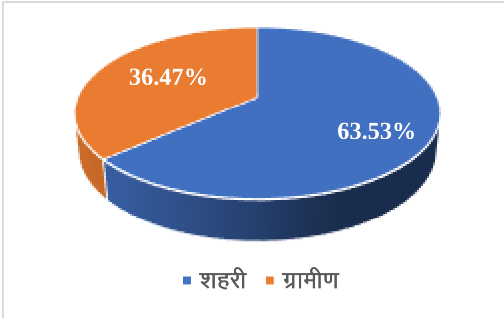

6.3. शैक्षिक स्तर आधारित वितरण

तालिका 3: शैक्षिक स्तर पर लिंग आधारित वितरण संख्या

शिक्षा स्तर	पुरूष	महिला	कुल संख्या	प्रतिशत
स्नातक)UG)	113	105	218	48.77%
12 वीं	69	35	104	23.27%
स्नातकोत्तर)PG)	66	36	102	22.82%
अन्य	15	8	23	5.15%
योग	**263**	**184**	**447**	**100%**

चित्र 3: शैक्षिक स्तर आधारित पुरूष–महिला

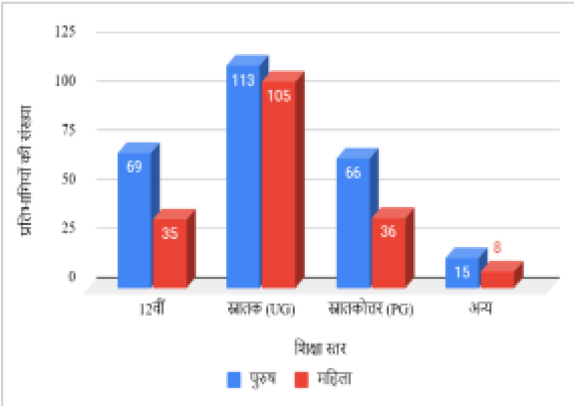

सर्वेक्षण में सम्मिलित कुल 447 प्रतिभागी राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े वे विद्यार्थी हैं, जिन्होंने अपनी उच्चतम शैक्षणिक योग्यता के रूप में विभिन्न स्तरों –12वीं, स्नातक, स्नातकोत्तर तथा अन्य को पूर्ण कर लिया है। उपलब्ध आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक प्रतिभागी स्नातक (UG) स्तर के हैं, जिनकी कुल संख्या 218 (48.77 %) है। यह दर्शाता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत या स्नातक स्तर पूर्ण कर चुके विद्यार्थियों में रासेयो के प्रति सहभागिता का स्तर व्यापक है। इस श्रेणी में पुरुष (113) और महिला (105) लगभग समान संख्या में सम्मिलित हैं, जो इस स्तर पर रासेयो की स्वीकार्यता में लिंग–संतुलन को दर्शाता है। दूसरी प्रमुख श्रेणी 12वीं उत्तीर्ण प्रतिभागियों की है, जिनकी कुल संख्या 104 (23.27 %) है। यह समूह उस युवा वर्ग को अभिव्यक्त करता है जिसने विद्यालय स्तर पर रासेयो से जुड़कर सेवा–आधारित गतिविधियों में योगदान दिया है। इस श्रेणी में पुरुषों (69) की संख्या महिलाओं (35) की तुलना में अधिक है। स्नातकोत्तर (PG) स्तर पर 102 प्रतिभागी (22.82 %) शामिल हैं, जो उच्च शिक्षा के उन्नत स्तर तक छे की प्रासंगिकता को प्रमाणित करते हैं। यहाँ भी पुरुष (66) और महिला (36) प्रतिभागियों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि रासेयो गतिविधियाँ शैक्षणिक उन्नति के साथ–साथ उच्च स्तरीय नेतृत्व एवं सामुदायिक अनुभव प्राप्त करने के साधन के रूप में देखी जाती हैं। अन्य श्रेणी में 23 प्रतिभागी (5.15 %) सम्मिलित हैं, जिनमें 15 पुरुष और 8 महिलाएँ शामिल हैं। यह समूह डिप्लोमा, व्यावसायिक कोर्स या वैकल्पिक शिक्षा को पूर्ण करने वाले छात्रों का प्रतिनिधित्व करता है। समग्र रूप से, उत्तरदाताओं की उच्चतम शैक्षणिक योग्यता के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना विभिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमियों वाले युवाओं तक अपनी पहुँच बनाए हुए है।

 Copyright @ 2026 Author

6.4. राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता की अवधि आधारित वितरण

तालिका 4: सहभागिता की अवधि आधारित वितरण

अवधि	संख्या	प्रतिशत (%)
1 वर्ष से कम	116	25.95%
1–2 वर्ष	154	34.45%
3–4 वर्ष	125	27.96%
5 वर्ष से अधिक	52	11.63%
योग	**447**	**100%**

चित्र 4: सहभागिता की अवधि आधारित वितरण प्रतिषत

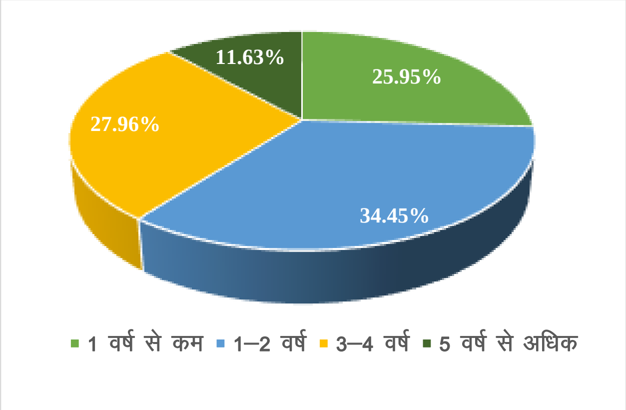

उत्तरदाताओं की राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता की अवधि के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक प्रतिभागी 1–2 वर्ष की अवधि से जुड़े रहे हैं, जिनकी संख्या 154 (34.45%) है। यह अवधि NSS गतिविधियों में सामान्यतः देखी जाने वाली संलग्नता को दर्शाती है। इसके बाद 3–4 वर्ष तक सक्रिय रहने वाले 125 प्रतिभागी (27.96%) हैं, जो कार्यक्रम के प्रति दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का संकेत देते हैं। 1 वर्ष से कम अवधि वाले 116 प्रतिभागी (25.95%) मुख्य रूप से नए स्वयंसेवकों का समूह हैं। वहीं 5 वर्ष से अधिक समय तक जुड़े 52 प्रतिभागी (11.63%) अनुभवी एवं निरंतर सक्रिय सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

6.5. परिकल्पना परीक्षण

शोध में निम्न परिकल्पनाएँ स्थापित की गईं–

- H0 (शून्य परिकल्पना) : राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता का युवाओं के कौशल विकास तथा शैक्षिक उन्नयन पर कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
- H1 (वैकल्पिक परिकल्पना) : राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता का युवाओं के कौशल विकास तथा शैक्षिक उन्नयन पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव है।

6.5.1 परिकल्पना परीक्षण की प्रक्रिया

परिकल्पना परीक्षण के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता से पूर्व एवं पश्चात कौशल तथा शैक्षिक उन्न्यन में हुए परिवर्तन का मूल्यांकन एक युग्मित नमूना *t*–परीक्षण (Paired Samples *t*-test) के माध्यम से किया गया। इस विश्लेषण में कुल 447 राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों के उत्तरों का उपयोग किया गया। प्रत्येक कौशल आयाम के लिए ''पहले'' और ''अब'' के माध्य स्कोर की तुलना कर यह निर्धारित किया गया कि राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता से सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार हुआ है या नहीं।

6.5.2 t–परीक्षण का गणितीय सूत्र

युग्मित t–परीक्षण का मूल सूत्र इस प्रकार है–

$$t = \frac{\bar{D}}{s_{D/\sqrt{n}}}$$

 Copyright @ 2026 Author

जहां:–

$\bar{D}$	माध्य अंतर (Mean Difference)
s_D	अंतर स्कोरों का मानक विचलन
n	नमूना आकार (447)
$s_{D/\sqrt{n}}$	माध्य अंतर की मानक त्रुटि (Standard Error of Mean Difference)

माध्य अंतर की गणना– $\bar{D} = \frac{\sum D}{n}$

जहाँ प्रत्येक प्रतिभागी का व्यक्तिगत अंतर–

$$D = X_{\text{अब}} - X_{\text{पहले}}$$

स्वतंत्रता की कोटि (*df*) –

$$df = n - 1 = 446$$

p–मूल्य का निर्धारण – $P_{\text{one−tailed}} = \frac{P_{\text{two−tailed}}}{2}$

यदि, $p \leq 0.05$ तो परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण माना गया।

6.5.3 परिणामों की प्रस्तुति

तालिका 5: राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता से पूर्व एवं पश्चात् कौशल एवं शैक्षणिक आयामों का युग्मित t–परीक्षण परिणाम

कौशल / शैक्षिक श्रेणी	माध्य (पहले)	माध्य (अब)	माध्य अंतर $\bar{D}$	*t*–मूल्य	*p*–मूल्य (एक–पुच्छीय)	सांख्यिकीय महत्व
नेतृत्व क्षमता	2.64	3.81	1.17	17.19	< .001	Significant
संचार कौशल	2.62	3.85	1.22	18.09	< .001	Significant
सामूहिक कार्य क्षमता	2.91	4.17	1.25	17.55	< .001	Significant
समस्या–समाधान क्षमता	2.87	4.02	1.14	16.13	< .001	Significant
सीखने/अकादमिक प्रेरणा	2.92	4.11	1.19	16.35	< .001	Significant

कुल उत्तरदाता = 447

नोट:– 0.05 के महत्व स्तर (α = 0.05) पर सभी *p*–मूल्य (< .001) सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण पाए गए, जो प्रत्येक कौशल आयाम में राष्ट्रीय सेवा योजना सहभागिता के प्रभाव की दृढ़ पुष्टि करते हैं।

6.5.4 परिकल्पना परीक्षण का निष्कर्ष

सभी कौशल आयामों में p–मूल्य < .001 पाया गया, जो α = 0.05 से काफी कम है। अतः

- शून्य परिकल्पना (H_0) **अस्वीकृत**
- वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) **स्वीकार**

Copyright @ 2026 Author

अतः यह सिद्ध होता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना सहभागिता ने कौशल विकास तथा शैक्षिक उन्नयन पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण और सकारात्मक प्रभाव डाला है।

6.5.5 खुले उत्तरों (Open-Ended Responses) का गुणात्मक विश्लेषण

सर्वेक्षण में संरचित प्रश्नों के अतिरिक्त, उत्तरदाताओं को राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) में सहभागिता से संबंधित अपने व्यक्तिगत अनुभव व्यक्त करने का अवसर दिया गया। प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया, जिसके आधार पर राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभाव को तीन प्रमुख विषयों में वर्गीकृत किया जा सकाः

- कौशल एवं व्यक्तित्व विकास,
- सामाजिक जुड़ाव एवं सामुदायिक अनुभव,
- शैक्षणिक प्रेरणा एवं अधिगम प्रभाव।

कौशल एवं व्यक्तित्व विकास

विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता राष्ट्रीय सेवा योजना सहभागिता को नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास एवं प्रबंधन कौशल के विकास से जोड़ते हैं। लगभग 28.74% प्रतिक्रियाओं में नेतृत्व एवं प्रबंधन कौशल का स्पष्ट उल्लेख था। इसके अतिरिक्त 19.46% प्रतिक्रियाओं में आत्मविश्वास वृद्धि एवं व्यक्तित्व विकास का वर्णन प्राप्त हुआ। यह संकेत देता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं में सॉफ्ट स्किल्स (soft skills) को बढ़ाने में अत्यधिक प्रभावी रहा है।

सामाजिक जुड़ाव एवं सामुदायिक अनुभव

कुल प्रतिक्रियाओं में 21.56% प्रतिभागियों ने स्वयंसेवा के दौरान समुदाय के साथ सक्रिय जुड़ाव को राष्ट्रीय सेवा योजना का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुभव बताया, जबकि 17.37% ने सामाजिक सेवा एवं जागरूकता अभियानों को प्रमुख प्रभाव माना।

शैक्षणिक प्रेरणा एवं अप्रत्यक्ष अधिगम प्रभाव

यद्यपि केवल 8.68% प्रतिक्रियाएँ प्रत्यक्ष शैक्षणिक प्रभाव से संबंधित थीं, फिर भी व्यापक विश्लेषण दर्शाता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा विकसित सकारात्मक व्यवहार, समय–प्रबंधन, समस्या–समाधान और संचार कौशल का अकादमिक प्रदर्शन पर परोक्ष प्रभाव पड़ा। कुछ उत्तरदाताओं ने विशेष परिस्थितियों में अध्ययन प्रभावित होने की टिप्पणी भी की, जिसे उन्होंने व्यक्तिगत समय–प्रबंधन से संबंधित माना।

खुले उत्तरों का विषयगत विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना सहभागिता का प्राथमिक प्रभाव कौशल विकास, नेतृत्व निर्माण, सामाजिक जागरूकता और व्यक्तित्व संवर्द्धन के रूप में प्रकट होता है, जबकि इसका शैक्षणिक प्रभाव अपेक्षाकृत परोक्ष किन्तु सकारात्मक दिशा में पाया गया। ये गुणात्मक निष्कर्ष अध्ययन के मात्रात्मक विश्लेषण (t–परीक्षण) का समर्थन करते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि राष्ट्रीय सेवा योजना एक प्रभावी अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम है।

7. शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता का छत्तीसगढ़ राज्य के युवाओं के कौशल विकास एवं शैक्षणिक उन्नयन पर सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। युग्मित t–परीक्षण (Paired Samples t-test) के परिणामों से यह प्रमाणित हुआ कि राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता के पश्चात् स्वयंसेवकों की नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल, सामूहिक कार्य दक्षता, समस्या–समाधान योग्यता तथा समय प्रबंधन जैसे प्रमुख कौशल आयामों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जहाँ सभी मामलों में p-value < 0-001 प्राप्त हुई। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना (H_0) को अस्वीकार तथा वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) को स्वीकार किया गया। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका केवल शैक्षणिक अंकों तक

 Copyright @ 2026 Author

सीमित न होकर सीखने की प्रेरणा, व्यवहारिक ज्ञान के अनुप्रयोग, अनुशासन एवं आत्मविश्वास के विकास के माध्यम से समग्र शैक्षणिक उन्नयन को प्रोत्साहित करती है। राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियों में सहभागिता के कारण स्वयंसेवकों का अकादमिक दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक, सक्रिय एवं सहभागितापूर्ण पाया गया, विशेषकर परियोजना कार्य एवं समूह–आधारित अधिगम में।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय सेवा योजना को एक प्रभावी अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) के मंच के रूप में स्थापित किया जा सकता है, जहाँ सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक सामाजिक समस्याओं के समाधान में लागू करने का अवसर प्राप्त होता है। इससे स्वयंसेवकों की आलोचनात्मक सोच, समस्या–विश्लेषण क्षमता एवं निर्णय–निर्माण दक्षता का विकास होता है।

गुणात्मक विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ युवाओं में सामाजिक संवेदनशीलता, सामुदायिक चेतना एवं नागरिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करती हैं। स्वास्थ्य, पर्यावरण, स्वच्छता एवं ग्रामीण विकास से जुड़ी गतिविधियों ने स्वयंसेवकों को सामाजिक वास्तविकताओं से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ा, जिससे उनमें राष्ट्रनिर्माण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ।

7.1. सिफारिशें

1. राष्ट्रीय सेवा योजना प्रमाण–पत्र को नौकरी चयन प्रक्रियाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं में उचित भारांक प्रदान किया जाए, जिससे युवाओं की सहभागिता और प्रतिबद्धता बढ़े।
2. राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियों को अल्पकालिक औपचारिकताओं के स्थान पर दीर्घकालिक, परिणामोन्मुख एवं समुदाय–आधारित स्वरूप प्रदान किया जाए।
3. राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारियों एवं स्वयंसेवकों के लिए नेतृत्व विकास, संचार कौशल एवं परियोजना प्रबंधन पर नियमित और संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
4. छत्तीसगढ़ राज्य की क्षेत्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कृषि, उद्यानिकी, ग्रामीण उद्यमिता, डिजिटल साक्षरता एवं स्वास्थ्य से संबंधित कौशल कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विकसित किए जाएँ।
5. परियोजना–आधारित अधिगम एवं सामुदायिक हस्तक्षेपों को राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत शैक्षणिक पाठ्यक्रम से जोड़ा जाए।
6. राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियों की योजना, निगरानी एवं मूल्यांकन हेतु डिजिटल पोर्टल एवं मोबाइल एप्लिकेशन का प्रभावी उपयोग किया जाए।
7. राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को स्वरोजगार, नवोद्यम तथा सामाजिक उद्यमिता से जोड़ने हेतु मार्गदर्शन एवं उद्भवन केंद्रों के माध्यम से आवश्यक सहायता प्रदान की जाए।
8. राज्य के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय सेवा योजना सहभागिता को अकादमिक क्रेडिट आधारित मूल्यांकन प्रणाली से जोड़ा जाए।
9. राष्ट्रीय सेवा योजना को युवा विकास नीति का एक प्रमुख स्तंभ बनाते हुए, कौशल भारत एवं डिजिटल भारत जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के साथ संस्थागत समन्वय स्थापित किया जाए तथा तथ्यों एवं आँकड़ों पर आधारित नीति निर्माण को प्रोत्साहित किया जाए।

7.1. भविष्य के शोध की संभावनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन ने छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका को कौशल विकास एवं शैक्षणिक उन्नयन के दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है; तथापि भविष्य के अनुसंधान के लिए अनेक संभावनाएँ उपलब्ध हैं। आगामी अध्ययनों में राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभावों का दीर्घकालिक विश्लेषण किया जा सकता है, जिससे समय के साथ युवाओं के कौशल, व्यक्तित्व तथा करियर विकास में होने वाले परिवर्तनों का सम्यक् आकलन संभव हो सके। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता और रोजगार प्राप्ति अथवा नियोजनीयता के मध्य संबंध का अध्ययन नीति–निर्माण की दृष्टि से विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

 Copyright @ 2026 Author

भविष्य के शोधों में राष्ट्रीय सेवा योजना की तुलना राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC), कौशल भारत तथा युवा संसद जैसे अन्य युवा कार्यक्रमों से करते हुए तुलनात्मक अध्ययन किए जा सकते हैं। साथ ही, ग्रामीण, शहरी एवं आदिवासी युवाओं पर इसके पृथक प्रभावों, लैंगिक आधार पर कौशल विकास में विद्यमान अंतर, तथा डिजिटल साधनों एवं तकनीकी हस्तक्षेपों की भूमिका का भी मूल्यांकन किया जा सकता है। राष्ट्रीय सेवा योजना और सामाजिक उद्यमिता एवं नवोद्यम संस्कृति के मध्य संबंधों का अध्ययन युवाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के नए आयाम प्रस्तुत कर सकता है। अंततः, गुणात्मक अनुसंधान विधियों—जैसे प्रकरण अध्ययन एवं कथात्मक विश्लेषण के माध्यम से स्वयंसेवकों के व्यक्तिगत अनुभवों का गहन अध्ययन राष्ट्रीय सेवा योजना के सामाजिक प्रभावों को और अधिक स्पष्ट एवं सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगा।

8. संदर्भसूचीः

1. Bringle, Robert G. 2015. "Service-Learning Essentials: Questions, Answers, and Lessons Learned by Barbara Jacoby (Review)." *Journal of College Student Development* 56(7):754–56. doi:10.1353/csd.2015.0075.

2. D.A. Kolb. 1984. *Experiential Learning: Experience as the Source of Learning and Development*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

3. Department of Public Relations. 2024. "The significant contribution of NSS volunteers in nation-building." https://dprcg.gov.in/post/1727100396/Raipur-National-Service-Scheme-volunteers-have-important-contribution-in-nation-building-Chief-Minister-Shri-Vishnu-Dev-Sai.

4. District-level Skill Gap Study For The State Of Chhattisgarh - India CSR. 2022. https://indiacsr.in/district-level-skill-gap-study-for-the-state-of-chhattisgarh/.

5. Final-report-of-Sub-Group-Report-on-Skill-Development. 2015. New Delhi. https://niti.gov.in/sites/default/files/2025-06/Final-report-of-Sub-Group-Report-on-Skill-Development.pdf.

6. Government of Chhattisgarh. 2025. https://cgstate.gov.in/en.

7. International Labour Organization. 2024. *India Employment Report 2024 (Youth Employment, Education and Skills)*. New Delhi: Institute for Human Development New Delhi. https://www.ilo.org/sites/default/files/2024-08/India%20Employment%20-%20web_8%20April.pdf.

8. Lobo, Sonia, Department of Humanities, NMAM Institute of Technology, Nitte (Nitte Deemed to be University), Udupi, Karnataka 574110, India., Srinivas Nekkar, Department of Humanities, NMAM Institute of Technology, Nitte (Nitte Deemed to be University), Udupi, Karnataka 574110, India., Ramakrishna B, Department of Humanities, NMAM Institute of Technology, Nitte (Nitte Deemed to be University), Udupi, Karnataka 574110, India., Niranjan N. Chiplunkar, and Prinicipal, NMAM Institute of Technology, Nitte (Nitte Deemed to be University), Udupi, Karnataka 574110, India. 2024. "The Role of the National Service Scheme in Fostering Social Skills Among Engineering Graduates." *Journal of Engineering Education Transformations* 38(2):47–59. doi:10.16920/jeet/2024/v38i2/24189.

 Copyright @ 2026 Author

9. Minati Saha. 2019. “Development of Humane Qualities in Adolescent Students Through the National Service Scheme (NSS).” *Journal of Education and Development Multi-Disciplinary, Peer Reviewed Journa* 9(18):177–88.

10. Mudi, Sanjoy. 2025. “Leadership and Professional Competency Building Through NSS: A Youth Perspective.” *International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies (IRJHIS)* 6(2). doi:03.2021-11278686.

11. Nama, Abhijit. 2025. “The Role of NSS in Shaping Personality Development: A Case Study of College Students in Khowai District, Tripura.”

12. National Service Scheme Revised Manual. 2006.

13. NSS Volunteers-National Service Scheme. 2025. https://nss.gov.in/nss-volunteer.

14. Patil-Nikam, Dr Anita Maruti. 2024. “SKILL DEVELOPMENT THROUGH NSS: PREPARING YOUTH FOR FUTURE CHALLENGES.” *ANVESHAK-International Journal of Managemen* 54(02):46–52.

15. Ramachandran, Dr P. 2024. “Empowering Leadership: Unveiling the Impact of NSS Volunteers’ Skills.” *International Journal of Research Publication and Reviews* 5(7):1549–54.

16. Soni, C. H. Lavanya, Dr Shabana Naz Siddique, Mr Abhijeet Lal, and Dr D. S. Raghuwanshi. 2025. “NATIONAL SERVICE SCHEME: WOMEN EMPOWERMENT_ EFFOERTS OF NSS.” *International Journal of Research Publication and Reviews* 6(7):5918–20.

Copyright @ 2026 Author